बिहार जागे... देश आगे

प्रभात खबर

पटना । मुजफ्फरपुर । भागलपुर । रांची । जमशेदपुर । धनबाद । देवघर । कोलकाता से प्रकाशित

पटना, मंगलवार
29.08.2023
श्रावण शुक्ल पक्ष 13 संवत 2080
पृष्ठ 14
मूल्य : ₹ 4
वर्ष : 28, अंक : 117
रजिस्ट्रेशन : आर एन 66055/96
prabhatkhabar.com

Publication: **Prabhat Khabar** Date:**28/08/2023**

Edition : All Edition Page Number: **03**

बच्चे और जानवरों के साथ एक्टिंग बहुत मुश्किल होती है : केके मेनन

हिंदी सिनेमा के समर्थ कलाकारों में से एक अभिनेता के के मेनन जल्द ही फिल्म 'लव ऑल' में नजर आनेवाले हैं. यह फिल्म बैडमिंटन खिलाड़ियों की यात्रा और मुश्किलों के बारे में है. यह फिल्म बाप-बेटे की इमोशनल स्टोरी पर आधारित है. इस फिल्म की पृष्ठभूमि में बैडमिंटन को रखा गया है. फिल्म की कहानी और अपने किरदार के बारे में उन्होंने प्रभात खबर से खास बातचीत की. उन्होंने बताया कि यह स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म पिता-पुत्र के रिश्ते, उनके जीवन, मानवीय संवेदनाओं, जीवन की विषमताओं और हार -जीत की फिल्म है. पढ़िए के के मेनन से उर्मिला कोरी की हुई बातचीत के प्रमुख अंश.

इंटरव्यू

- ***लव ऑल बैडमिंटन पर आधारित फिल्म है, किस तरह से यह फिल्म इस खेल को बढ़ावा देगी ?***

— ये बहुत ही खूबसूरत खेल है. जिस खूबसूरती के साथ ये खेला जाता है, उस खूबसूरती के साथ कभी इसे पेश नहीं किया जाता. खासकर सिनेमा में ये कभी आया ही नहीं. बैडमिंटन में कई खास ग्लोरी देश को मिली है. इस फिल्म के निर्देशक ने जब मुझसे ये बात कही तो मुझे लगा कि इस पर फिल्म बननी चाहिए. इसके अलावा इस फिल्म के निर्देशक सुधांशु शर्मा बैडमिंटन खिलाड़ी रहे हैं, तो उन्हें इस खेल से जुड़ी बारीकियों से भी रूबरू करवाया.

- ***किसी किरदार को प्ले करते हुए आपका अप्रोच क्या होता है?***

— मैं जब भी किसी किरदार से जुड़ता हूं, तो उस इंसान को समझने की कोशिश करता हूं , जिसे मैं प्ले कर रहा हूं. मुझे बस स्क्रिप्ट अच्छी लगती है, उसके बाद मैं और कुछ नहीं सोचता हूं. मैं बस खुद से बेस्ट उस किरदार में से निकालकर लाता हूं.

- ***एक्टर के तौर पर क्या प्रोजेक्ट से जुडी रूचि खत्म हो जाती है ?***

— वो मैं अफोर्ड नहीं कर सकता हूं. हारते हुए मैच को भी खेलना पड़ता है. हार जानते हुए भी कभी फिल्म को छोड़ता नहीं हूं. अपनी तरफ से बहुत कोशिश करता हूं. ऐसी कई फिल्में थी, जो फ्लोर पर आयी थी ,तो मुझे बहुत अच्छी लगी थी, लेकिन शूटिंग के तीसरे दिन ही आपको समझ आ जाता है कि ये फिल्म डूबने वाली है, लेकिन एक प्रोफेशनल के तौर पर आप अपना बेस्ट देना चाहते हैं और मैं वही करता हूं.

- ***विनर की आपकी परिभाषा क्या है?***

— विनर एक अस्थायी फेज है.अगली बार आप हार भी सकते हैं. जीत मॉमेंट्री होता है. द बेस्ट क्या होता है? आपको हमेशा अवार्ड टोकन ऑफ एप्रिशिएसन के तौर पर मिल सकता है, लेकिन द बेस्ट बोलना बस आपके इगो को सहलाना है और कुछ नहीं.

- ***नवाज ने कहा कि बच्चों के साथ अभिनय करना मुश्किल है, इस फिल्म में बाल कलाकार आपके लिए कितना मुश्किल रहा?***

— इस फिल्म में जिस उम्र का बच्चा है, उस उम्र के बच्चों के साथ नहीं बल्कि बहुत ही छोटे बच्चे जो होते हैं, जो पप बोलते हैं, उनके साथ मुश्किल होता है. उनके अच्छा टेक के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है और जब उनका अच्छा टेक हो जाता है, तो वो हमारे टेक को खराब कर देते हैं. बच्चे और जानवरों के साथ एक्टिंग मुश्किल है, क्योंकि सारी वाह-वाही वही ले जाते हैं.

- ***ओटीटी की प्रसिद्धि कितनी खास है ?***

— बहुत ज्यादा. ओटीटी ने एक्टर के तौर पर मुझे अलग-अलग मौके दिये हैं, वरना फिल्मों में जबरदस्ती विलेन बनना पड़ता था, क्योंकि वही एक माध्यम था.